उपसंहार
उपसंहार

भारत एक वहुभाषिक राष्ट्र है, जिसमें अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। प्रत्येक भाषा साहित्य की दृष्टि से स्वयंपूर्ण एवं समृद्ध है। प्रत्येक भाषा के साहित्य में विभिन्न अनुभूतियाँ तथा समुद्रध विचारों की अभिव्यक्ति होती है। अनुवादक एक भाषा के साहित्य (कविता, उपन्यास, नाटक, आत्मकथा आदि) को दूसरी भाषा में अनुवादित करता है, जिससे मूल भाषा में अभिव्यक्ति अनुभूतियों तथा विचारों से लक्ष्य भाषा के पाठक लाभान्वित होते हैं। यह देखा गया है कि एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद सफल अथवा नारायण नहीं होते। कुछ अनुवादों में भाषा, भाषा, व्यक्तिगत संरचना के स्तर पर विभिन्न प्रकार की कमियाँ रह जाती हैं। अनुवादित साहित्य की उपलब्धियाँ एवं कमियाँ पर प्रकाश डालने हेतु अनुवादपरक समीक्षात्मक अध्ययन की आवश्यकता होती है।

‘आधुनिक मराठी प्रतिनिधि काव्यकृतियाँ’ का हिंदी अनुवाद: अनुवादपरक समीक्षात्मक अध्ययन’ में मराठी की प्रतिनिधि काव्य-कृतियों के हिंदी अनुवादों के मूल्यांकन तथा समीक्षा की आवश्यकता प्रकाश डाला गया है। इससे अनुवाद की सीमाओं का अध्ययन होता है। काव्यानुवाद में विद्यमान भाषा, भाषा तथा व्यक्तिगत संरचना के स्तर की दृष्टियाँ सामने आती हैं। अनुवादपरक समीक्षात्मक अध्ययन से कविता के अनुवाद की समस्याएँ भी सामने आती हैं। यह भी सामने आता है कि संबंधित अनुवादक ने उसके निराकरण के कोण से उपयोग किए हैं। अनुवाद की अभावता, सर्वनाशीलता, अनुवाद-कौशल पर प्रकाश डाला जा सकता है।

शोधकार्य के प्रथम अध्याय में हमने मराठी से हिंदी में अनुवादित काव्य-कृतियों तथा पत्रिकाओं में प्रकाशित काव्यानुवाद की परंपरा का सामान्य परिचय दिया है। मराठी से हिंदी में अनुवादित कविताओं के सामान्य परिचय में- मूल कवि, अनुवादक, अनुवादित कृति का प्रकाशन काल, अनुवादक की प्रेरणा, अनुवादित कृति का स्वरूप आदि को संख्या में स्फट्क किया गया है। काव्यानुवाद को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से हमने दो भागों में विभाजित किया है-

1. मराठी संत साहित्य का हिंदी अनुवाद :
2. आधुनिक मराठी काव्य-कृतियों के हिंदी अनुवाद:

मराठी संत साहित्य के हिंदी अनुवाद में ‘बाणेश्वर’ की ‘बाणेश्वरी’, ‘अमृतानुभव’, ‘चांदेव पासठी’, ‘हरिपाठ’ संत एकनाथ की ‘भागवत’ तथा अभंग, रामदास स्वामी का ‘दासबोध’, ‘मनाचे श्लोक’ तथा संत तुकडोजी महाराज की भजनावली आदि के हिंदी अनुवादों का परिचय दिया गया है। आधुनिक मराठी काव्य कृतियों के हिंदी अनुवादों में, शेषावसुत, ग. दि. मादगुलकर,
कुसुमप्रज, नारायण सुर्ख्य, विदा करंतीकर, मंगेश पांडगावकर, नामदेव ठाकूर, दया पवार आदि प्रख्यात कवियों की रचनाओं का संक्षेप में परिचय दिया गया है।

मराठी काव्य कृतियों के हिंदी अनुवाद की परंपरा से स्पष्ट होता है कि मराठी काव्यानुवाद का आरंभ 19 वीं सदी के दूसरे दशक से हुआ है। मराठी काव्य के हिंदी अनुवाद का आरंभ मराठी संत कवियों के काव्य ग्रंंथों से हुआ है। इस अनुवाद की परंपरा का शुभारंभ ज्ञानप्रमुख संत ज्ञानेश्वर महाराज की ‘ज्ञानेश्वरी’ के अनुवाद से हुआ है। अनुवाद की दृष्टि से ‘ज्ञानेश्वरी’ मराठी साहित्य की सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचना है, हिंदी में ज्ञानेश्वरी के सात अनुवाद हुए हैं। ‘ज्ञानेश्वरी’ के साथ-साथ उनकी ‘अमृतनाभ’, ‘पासूटी प्रदीप’, तथा ‘हरिपाठ’ के एकाधिक हिंदी अनुवाद हुए हैं।

मराठी संत साहित्य के हिंदी अनुवाद की पृष्ठभूमि में ज्ञानेश्वर के साथ संत एकनाथ, संत तुकाराम, संत नामदेव, श्री सरदार रामदास तथा आधुनिक संत तुकडौजी महाराज आदि के ग्रंंथों तथा पदों के हिंदी अनुवाद हुए हैं। मराठी संत साहित्य के हिंदी अनुवाद की परंपरा स्वतंत्रपूर्व युग से उदित होकर, स्वतंत्रतापत्र युग में भी चलती रही।

स्वतंत्रतापत्र युग में मराठी संत कवियों की काव्य-रचनाओं के साथ-साथ आधुनिक मराठी काव्य-कृतियों के हिंदी अनुवाद प्रभूत मात्रा में किए गए। अनुवादकों ने बहुलविश्वविद्यालयों से स्वतंत्र काव्य-संघों का अपने आकलन, अनुभूति तथा रूचि आदि आंतरिक प्रेरणा के पक्षों से प्रभावित होकर अनुवाद किए हैं। स्पष्ट है कि स्वतंत्रतापत्र युग में मराठी साहित्य के हिंदी अनुवाद को नवीन मोड प्राप्त हुआ।

मराठी संत साहित्य तथा आधुनिक युग की बहुमूल्य विचारधाराओं से स्वतंत्र काव्य-कृतियों के हिंदी अनुवाद की परंपरा से मराठी के विविध काव्यधाराओं का प्रातिनिधित्व परिवर्तित होता है। मराठी साहित्य के हिंदी अनुवाद में मराठी तथा हिंदी भाषी अनुवादकों ने योगदान दिया है। वहीं मराठी साहित्य के हिंदी अनुवाद में अनुवादकों की कई प्रेरणाएँ थान में आती हैं। मराठी कृति तथा कवियों की स्तरीयता, राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का प्राचार्य कायर, अनुवादकों की स्वेच्छा एवं रूचि, नैसर्गिक तुक-दुक्त आदि प्रकाशक संस्थाओं की प्रतिकृतियाँ उपक्रम सरकार समन्वित प्रेरणाओं से यह कार्य हो रहा है।

द्रौपदीय अथवा में अनुवाद और अनुवाद समीक्षा का सौदाहृति किया गया है। इस विवेचन में अनुवाद संबंधी कई पक्ष लिए गए हैं। अनुवाद की परिभाषा, स्वतंत्र प्रक्रिया का विस्तार ने अपनी-अपनी ज्ञान साधन के आधार पर विवेचन किया है। अनुवाद एक प्रक्रिया द्वारा संपन्न होनेवाला कार्य है, जो ब्रह्म भाषा की सामग्री के अनुकूल कला, कौशल तथा विलास भी है। नाइडु, न्यूमार्क तथा बाओमेंट ने अनुवाद प्रक्रिया के सीमाओं का अपने-अपने दंग से स्वतंत्र निर्भर
किया है। हमें अनुवाद प्रक्रिया के पाठ-विश्लेषण, अंतरण, पुनर्गठन, भाषांतरण तथा मूल से तुलना-सोपान महत्त्वपूर्ण लगते हैं। अनुवाद प्रक्रिया के इन चरणों को प्रायः सभी विद्वानों ने स्वीकृति दी है।

कविता आत्मागृहत्व की स्वाभाविक अभिव्यक्ति होती है; लेकिन काव्यानुवाद कई बाह्य प्रेरणाओं से प्रभावित होनेवाला कार्य है।

काव्यानुवाद में अनुवादक को मूल के आकलन, लक्ष्यभाषा में सटीक शब्द-चयन, कथन निर्बाह, लक्ष्य भाषा के संरचनात्मक वैशिष्ट्य आगत शब्दों का अनुवाद आदि कई सौंपानों से गुजरना होता है।

अनुवाद-कार्य मात्र किसी कृति के अनुवाद होने पर समीक्षा का तत्त्व नहीं होना चाहिए; उसकी समीक्षा भी महत्त्वपूर्ण है, इससे अनुवादित कृति के तत्त्व को नापा जा सकता है।

साहित्यिक अनुवाद के समीक्षात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि साहित्यिक अनुवाद एक जैसा नहीं हो सकता, साहित्यिक अनुवाद का स्वरूप कई तत्त्वों पर निर्भर होता है। साहित्यिक अनुवाद में वस्तुनिष्ठता कम व्यक्तिनिष्ठता अधिक होती है। विद्वानों द्वारा अनुवाद तथा अनुवाद समीक्षा संबंधी चित्रण के आधार पर हमने अनुवाद समीक्षा के दो प्रारूप निश्चित किए है- 1) अनुवाद की सत्ती समीक्षा हेतु प्रारूप 2) अनुवाद की गहन समीक्षा हेतु प्रारूप

तृतीय अध्याय में आधुनिक रचनाओं प्रतिनिधि काव्य-कृतियों की अनुवादनुकूलनता का अध्ययन किया गया है। किसी भी रचना (कविता, उपन्यास, नाटक, आत्मकथा आदि) के अनुवाद का अध्ययन उसकी अनुवादनुकूलता के विवेचन से आरंभ होता है। अर्थात् सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषिक आदि दृष्टियों से कृति की अनुवादनुकूलता किस मात्रा तक है- इसका अध्ययन करना आवश्यक होता है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिनिधित्व काव्य कृतियों के समाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक संदर्भों एवं आयोजनों की अनुवादनुकूलता के साथ- साथ मराठी तथा हिंदी भाषा की संरचना की दृष्टि से अनुवादनुकूलता का अध्ययन किया गया है।

अनुवाद अध्ययन के लिए चुनी गई अधिकतर काव्य-कृतियों की अधिकतर कविताओं के विषय तथा उन कविताओं में अभिव्यक्ति भाव अनुवादनुकूल है।

चुनी हुई मराठी काव्य-कृतियों में आए हुए काव्य-उपकरण जैसे- उपन्यास, प्रतीक, लालक्षणिक अभिव्यक्तियों आदि हिंदी भाषा के लिए अपरिचित नहीं हैं। हिंदी काव्य-भाषा में इन उपकरणों का प्रयोग होता है। अतः इन उपकरणों की दृष्टि से ये रचनाएँ अनुवादनुकूल हैं।

310
अभाग, आजवा छद्मों में रचित कविताओं की अनुवादनुकृति का मात्रा इस अर्थ में कम है कि हिंदी में इन छद्मों के अभाव के कारण अनुवाद में उनका प्रयोग अस्थायी किया गया है।

चयन की गई दलित काव्य-कृतियों की कविताओं में दलित-जीवन विशेष से सरोकार रखने वाले संदर्भ आए हैं, किंतु उनकी संख्या कम है। अतः इस संदर्भ में भी ये रचनाएँ अनुवादनुकृत हैं।

दलित काव्य-कृतियों की कुछ कविताओं में आए हुए दलित जाति के शब्द, उनके बिगड़े हुए रूप, विशिष्ट मुहावरे, उनकी बोली के शब्द आदि आते हैं। मूल सामग्री में बोली का आधिक्य अनुवादनुकृति में कठिनाई पैदा करता है।

‘सलाम’ काव्य-संग्रह की कविताओं में आई हुई शब्द-क्रिया, वक्रोक्ति के विशिष्ट प्रयोग आदि उसी प्रभावसमता के साथ तथा शब्द-क्रिया के उसी चमत्कार के साथ अनुदित करना असंभव है। ऐसे प्रसंगों में मूल अभिव्यक्तियों को छोड़ना पड़ता है।

चुनी हुई कविताओं में कहाँ-कहाँ महाराष्ट्र तथा मराठी संस्कृति से संबंधित विशिष्ट संदर्भों का प्रयोग मिलता है। जैसे-गीत (पावड़ा), नृत्यगीत (लावणी), त्योहार (पोळे), व्यंजन (पोळी) आदि। ‘माझे विद्यापीठ’, ‘सलाम’, ‘वृषभपुरुष’ ‘आता छोड़ जाऊ दूया! में इस प्रकार के विशिष्ट संदर्भ अधिक हैं। अतः इन रचनाओं की अनुवादनुकृति का मात्रा कुछ कम है।

परिणामत: अनुवादक को संतुलन साधने के लिए अन्य युक्तियों से काम लेना जरूरी हुआ है।

मराठी तथा हिंदी एक ही परिवार की भाषाएँ हैं। दोनों के शब्दों के खोल समान हैं। दोनों भाषाओं में संपर्कतः निकटता भी है, परिणामत: शब्द, प्रतीक, मुहावरे आदि स्तरों पर इनमें काफी समानता है। यही कारण है कि शब्द स्तर पर दोनों में परस्पर अनुवादनुकृति विद्यमान है।

चुनी हुई अधिकतर रचनाएँ मराठी की मुख्य काव्यधारा से जुड़ी हुई हैं। इस धारा में सामान्यतः मध्यवर्गीय भावानुकृति की अभिव्यक्ति हुई है। संस्कृति विशेष या अन्य विशिष्ट संदर्भ कम आए हैं। अतः: इन रचनाओं के भाव हिंदी में आसानी से अनुदित हो सकें हैं।

चतुर्थ अध्याय में आधुनिक मराठी प्रतिनिधिक काव्य-कृतियों के हिंदी अनुवादों की सममूल्यता के स्वरूप को स्पष्ट किया गया है। अनुवादित कृति में सममूल्यता का होना आवश्यक है। सममूल्यता कृति के अर्थस्तर तथा अभिव्यक्ति स्तर से संबंधित होती है। प्रस्तुत अध्याय में मराठी से हिंदी में अनुवाद की प्रतिनिधित्व काव्य-कृतियों में निहित अर्थगत सममूल्यता तथा अर्थगत सममूल्यता से संबंधित स्थितियों-अर्थार्थों, अर्थाहानि, अर्थात्तरण-का समावेश कर चित्रण किया गया है।

प्रस्तुत अध्याय में चयन की गई काव्य-कृतियों की अभिव्यक्ति सममूल्यता की मात्रा का भी विवेचन किया गया है। अनुवादित कृतियों की काव्यभाषा की सममूल्यता के अर्थस्तर में, कृति की
शब्द-योजना, अलंकार-योजना, विखर-योजना, छद-योजना, मुहावरे की आदि समूचलता का स्वरूप स्पष्ट किया गया है।

चयन की गई काव्य-कृतियों के समथूल्यतासंबंधी विवेचन से स्पष्ट होता है कि चूँकि इसमें विभिन्न अर्थ, संस्करण कम हैं, इन काव्य-कृतियों में अर्थसंक्षिप्त समथूल्यता की मात्रा अधिक है।

अनुविदित संग्रहों में मूल अर्थ रखता किया गया है। कहीं-कहीं मूल अर्थ तथा अनुवाद में अभिव्यक्ति अर्थ में न्यूनाधिक अंतर मिलता है। साथ ही इन अनुविदित काव्यसंग्रहों में अर्थयोग, अर्थहत्या, अर्थांतरण की स्थितियों भी मिलती है; पर वे संख्या में कम हैं।

अभिव्यक्तिगत समथूल्यता में शब्दवर्ग, अलंकार, विखर तथा छद में अधिकतर समथूल्यता है। ऐसा होते हुए भी कुछ अपवादतमक स्थितियों भी मिलती हैं।

मराठी काव्य-कृतियों के हिंदी अनुवाद में उन स्थलों पर समथूल्यता कम दिखाई देती है, जहाँ संस्कृतिक तथा भौगोलिक भिन्नता की मात्रा अधिक है। विभाजन: कह सकते हैं कि सामान्य आशाएं एवं अभिव्यक्ति से लुकते कविताओं में समथूल्यता की मात्रा अधिक है।

पंचम अध्याय में आधुनिक मराठी प्रतिनिधि काव्य-कृतियों के हिंदी अनुवादों में उपम दुर्दृष्टमाकरण में समथव के स्वरूप का विवरण किया गया है। अनुवाद दो स्थितियाँ से संबंधित होता है जिसमें एक संठ भाषा और दूसरी लक्ष्य भाषा है। दुर्दृष्टमाकरण परस्पर निरोध दो स्थितियों को कहते हैं। यह दुर्दृष्टमाकरण स्थान, काल, व्यक्तिगत गटन, भाषा संरचना आदि कई प्रकार की होती है। अनुवादक दुर्दृष्टमाकरण में समथव का प्रयास करता है। प्रस्तुत अध्याय में आधुनिक मराठी प्रतिनिधि काव्य-कृतियों हिंदी अनुवादों में निहित दुर्दृष्टमाकरण तथा अनुवादक द्वारा किए गए समथव एवं समथव होते हैं। स्वरूप दुर्दृष्टमाकरण में समथव का स्पष्ट किया गया है। प्रस्तुत अध्याय में दुर्दृष्टमाकरण एवं समथव को स्पष्ट करने के लिए दो श्रेणियों के आधार पर विभाजन किया गया है। 1. अनुवाद का बाह्य संदर्भ, 2. अनुवाद का आत्मसिद्ध संदर्भ। साथ ही गुणात्मक समथव के संदर्भ में अनुविदित काव्य-कृतियों का अध्ययन किया गया है।

मराठी प्रतिनिधि काव्य-कृतियों के हिंदी अनुवादों में दुर्दृष्टमाकरण की विभिन्न स्थितियों मिलती है। यह दुर्दृष्टमाकरण सामान्य, सांस्कृतिक, भौगोलिक तथा कहीं-कहीं कवि की शब्द-शीर्षा से उपभोग हुई है। अधिकतर अनुवादक के पादरीपणे देखकर संरचना का प्रयास किया है। अनुवादकों द्वारा गुणात्मक की कृति से चुनुने के गुणों में यथासंभव संरचना का प्रयास हुआ है। ऐसा होते हुए भी मनोज सनकर का अनुवाद संदर्भ की ओर, किरण मेश्रम का अनुवाद संप्रेक्षणता की ओर तथा चंद्रकांत बाहुव्यवहार का अनुवाद मूलस्थता की ओर सुका हुआ सा प्रतीत होता है।
रुद्रदत्त मिश्र, वसंत देव, गजानन चक्रवर्ती, ओमप्रकाश वाल्मीकि, चंद्रकांत पाटील के अनुवादों में सभी युगों के संतुलन का अपना सफल प्रयास हुआ है।

इस अध्याय में आधुनिक मराठी प्रतिनिधि काव्य-कृतियों के हिंदी अनुवादों में उपस्थित परिवृत्तियों के स्वरूप को विशद किया है। अनुवाद में द्वैतवादमतता में समन्वय के साथ ही कुछ ऐसी स्थितियाँ होती हैं, जिनमें परिवृत्ति या विचलन कहते हैं। परिवृत्ति से अभिव्यक्त हैं ‘दोनों’ भाषाओं के बीच विभिन्न स्तरीय संवादिता से विचलन’। इस प्रकार के विचलन की स्थितियाँ का अध्ययन प्रस्तुत अध्याय में किया गया है। इसमें 1. अनिवार्य परिवृत्ति, 2. ऐंछिक परिवृत्ति का समावेश है।

अनिवार्य परिवृत्तियों में व्यक्तिरुप शब्दों तथा व्यक्तिरुप कोटियों की परिवृत्तियाँ का अध्ययन किया गया है। ऐंछिक परिवृत्ति के अंतर्गत अनुवादक की इच्छा से आई हुई परिवृत्तियाँ का विचलन किया गया है।

आधुनिक मराठी काव्य-कृतियों के हिंदी अनुवादों में अनिवार्य तथा ऐंछिक दोनों प्रकार की परिवृत्तियाँ के उदाहरण मिलते हैं। अनिवार्य परिवृत्ति में मराठी तथा हिंदी भाषा की व्यक्तिरुप संरचना की भिन्नता से उत्पन्न अनिवार्य विचलन की स्थितियाँ हैं। साथ ही मूल मराठी भाषा के अभंग, ओवी, दंडी आदि छंदों से भी अनिवार्य विचलन की स्थितियाँ उत्पन्न हुई हैं। भाषा की व्यक्तिरुप संरचना से उत्पन्न अनिवार्य परिवृत्ति, परिवृत्ति होती है, किंतु इस प्रकार की परिवृत्ति से मूल पाठ के भाषा तथा आश्य के अंतरण की प्रक्रिया में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होती।

आधुनिक मराठी प्रतिनिधित्व काव्य-कृतियों के हिंदी अनुवादों में अनुवादकों ने अपनी इच्छा से पंक्तियों, पदों, विशेषणों का योग किया है। साथ ही नए उपमान के रूप में अलंकृत अभिव्यक्ति के स्थान पर अलंकृत अभिव्यक्ति के रूप में तथा अनलंकृत अभिव्यक्ति के स्थान पर अनलंकृत अभिव्यक्ति के रूप में ऐंछिक विचलन हुए हैं। यह विचलन की स्थितियाँ सभी अनुवादों में एक जैसी तथा एक रूप में नहीं है। रुद्रदत्त मिश्र (हिंदी गीत रामायण), मनोज सोनकर (मंगल विद्यापीठ, छदमबाई), गजानन चक्रवर्ती (वृक्षभूमि) के अनुवादों में पंक्तियों, पदों तथा विशेषणों के रूप में ऐंछिक विचलन हुए हैं। अन्य प्रमुख कृतियों में ऐंछिक विचलन की स्थितियाँ एक जैसी हैं। यथानां, उपमान, अलंकृत की अनलंकृत अभिव्यक्ति, अनलंकृत की अलंकृत अभिव्यक्ति आदि।

अनुवादकों द्वारा किए गए ऐंछिक विचलनों से समेत होता है कि ये ऐंछिक विचलन मूल कथित के प्रभाव, लय को यथावत बनाए रखने के उद्देश्य से किए गए हैं।

प्रस्तुत शोधकार्य के सप्ताह अध्याय में आधुनिक मराठी प्रतिनिधि काव्य-कृतियों के हिंदी अनुवादों की योग्यता तथा उनके शोधकार्य का अध्ययन किया गया है, जिसमें मूल विषय एवं भाषा के प्रति विवेचन अनुवादकों की प्रतिविद्धता, उनका भाषा-ज्ञान, विषय ज्ञान, उनका अनुवाद संबंधी
सौंदर्यातिक अध्ययन और अनुवाद कार्य में उनके योगदान के स्वरूप को विशद किया गया है। अनुवादकों की सूजनशीलता के अध्ययन से उनकी प्रतिभा, संबंधशीलता, कल्पकता आदि का परिचय हुआ है, जिससे यह स्पष्ट हुआ है कि आधुनिक मराठी प्रतिनिधि काव्य-कृतियाँ के हिंदी अनुवादों में अनुवादकों की क्षमता, योग्यता तथा काव्य-विषयक समझ भिन्न-भिन्न होने से, उनके सूजनासम्पत्ति के बिना आं विशदता मिलती है। ऐसा होते हुए भी सभी अनुवादकों की सूजनासम्पत्ति के कुछ बिंदु इस प्रकार हैं- भाववानुकल काव्यभाषा का प्रयोग, जिसके लिए अनुवादकों ने पद, विशेषण, क्रिया विशेषण, शब्द आदि का अपनी ओर से योग किया है। अनुवादकों ने यह योग लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुकूल चयन किए हैं; लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुकूल मुहावरों, प्रतीकों तथा लाभनिक शब्दों का प्रयोग हुआ है। साथ ही लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुकूल सामाजिक, सांस्कृतिक तथा भौगोलिक शब्दों का चयन किया गया है। सूजनासम्पत्ति के ये बिंदु सभी अनुवादकों के अनुवाद में मूल्यांकन मात्रा में मिलते हैं।